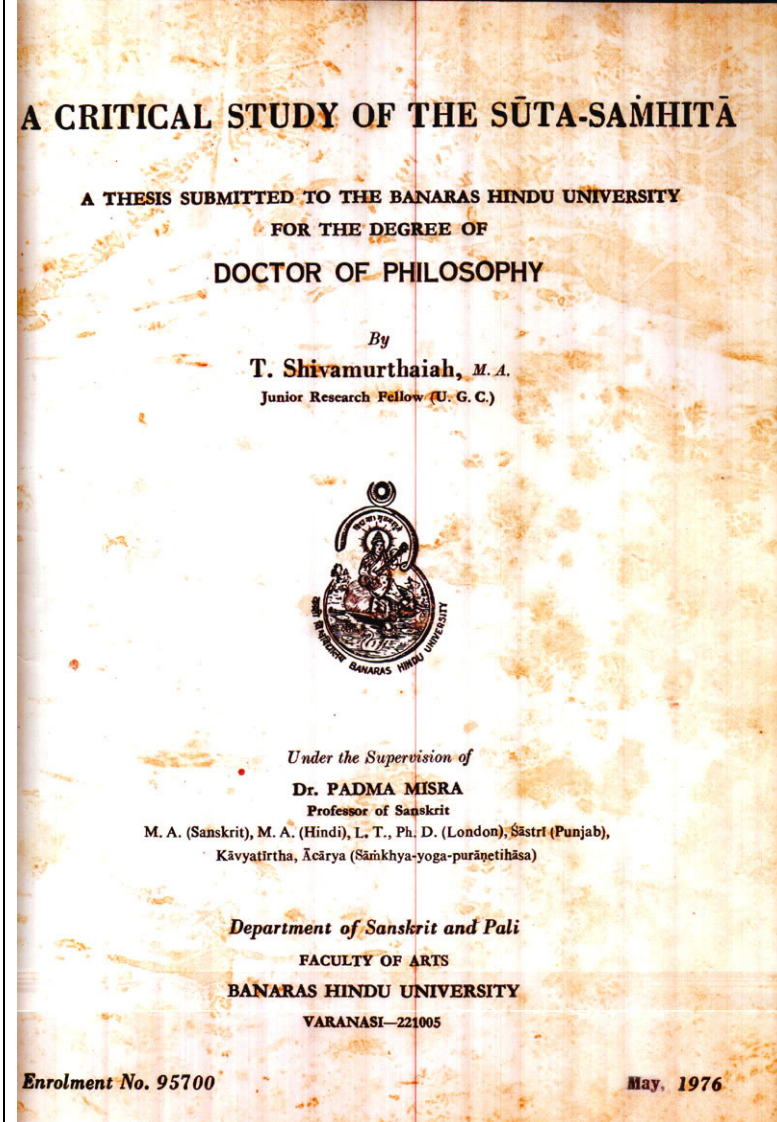


Original Thesis (1976)
A Critical Study of the Sūta Saṁhitā
by **Dr Shivamurthy Swamiji**
[Banaras Hindu University, Varanasi, India]

- 1 -

Plagiarism (1981)
Sūta-Saṁhitā kā Alocanātmak Adhyayan
by **Dr Ramakant Jha**
[Kashi Vidyapeeth University, Varanasi, India]



॥ श्रीः ॥
विद्याभवन प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला
१५५

सूतसंहिता-मीमांसा
(स्कन्दपुराणान्तर्गत सूतसंहिता का समीक्षात्मक अध्ययन)

लेखक
डॉ. रमाकान्त झा
व्याकरण-वेदान्त-साहित्याचार्य
भूतपूर्व प्रधानाचार्य
ब्रह्मर्षि संस्कृत महाविद्यालय
रेवतीपुर, गाजीपुर



चौखम्बा विद्याभवन
वाराणसी

INTRODUCTION

I. THE PLACE OF SŪTA-SAMHITĀ IN THE PURĀNAS

The Sūta-Saṁhitā forms a part of the voluminous Skanda-Purāṇa which consists of six Samhitās namely, 1. Sanatkumāra-Saṁhitā (55,000 verses), 2. Sūta-Saṁhitā (6,000 verses), 3. Śaṅkara-Saṁhitā (30,000 verses), 4. Vaiṣṇava-Saṁhitā (5,000 verses), 5. Brāhma-Saṁhitā (3,000 verses) and 6. Saura-Saṁhitā (1,000 verses).¹ These Samhitās altogether consisting of one lakh of verses are unequally divided into a total number of fifty Khaṇḍas - of which twenty-five belong to the Sanatkumāra-Saṁhitā alone, four to the Sūta-Saṁhitā and twenty-one to the Śaṅkara-Saṁhitā.²

[p.1]

XXXX

R.C.Hazra finds a discrepancy in the Sūta-Saṁhitā regarding the number of verses constituting the Skanda-Purāṇa. Although it explicitly states that the Skanda-Purāṇa consists of one lakh of verses, he says, the total number of verses of all the Samhitās as furnished by it comes to 86,000 only.³ But there is no such error in any of the printed editions of the Sūta-Saṁhitā. The scholar has made this criticism on the basis of a manuscript of the Sūta-Saṁhitā in the collection of the India Office Library, London, which gives an incorrect reading "granthatāḥ caiva ṣaṭ-triṁśat-sahasreṇopa-lakṣitā" (36,000) in place of "granthatāḥ pañca-pāncāśat-sahasreṇābhinirmitā" (55,000) while recounting the number of verses in the Sanatkumāra-Saṁhitā.⁴

[p. 1]

द्वितीय अध्याय

सूतसंहिता एवं उसका वर्ण्यविषय

संहितात्मक विभाग वाले स्कन्दपुराण में कुल छः संहिताएं हैं—

(१) सनत्कुमारसंहिता	(५५ हजार श्लोक)
(२) सूतसंहिता	(६ हजार श्लोक)
(३) शङ्करसंहिता	(३० हजार श्लोक)
(४) वैष्णवसंहिता	(५ हजार श्लोक)
(५) ब्राह्मसंहिता	(३ हजार श्लोक)
(६) सौरसंहिता	(१ हजार श्लोक)

लगभग एक लाख श्लोकों से युक्त ये संहिताएं पचास खण्डों में विभक्त हैं, जिनमें २५ सनत्कुमारसंहिता, ४ सूतसंहिता और २१ शङ्करसंहिता के अन्तर्गत हैं। सनत्कुमारसंहिता के २५ खण्ड हैं—क्षेत्र, तीर्थ, काशी, सद्वाद्वि, हिमाचल, मलयाचल, विन्ध्याद्रि, मोक्ष, प्रभास, पुष्कर, नागर, नर्मदा, श्रीशैल, अवन्ती, गौरी, क्षेत्र, केदार, हरिद्रार, सेतुमाहात्म्य, कालिका, तत्वोपाख्यान, नदी, धर्म, देश तथा वर्ण।

सूतसंहिता के ४ खण्ड हैं—शिवमाहात्म्य, ज्ञानयोग, मुक्ति तथा यज्ञवैभव।

शङ्करसंहिता के २१ खण्ड हैं—सम्भव, आसुर, वीरभद्रेन्द्र, देव, युद्ध, दक्ष, उपदेश, उपवीत, स्वर, गङ्गासागर, सागर, वेदसार, सिद्ध, प्रमेय, उमा, नागर, प्रायश्चित्त, विपाक, दानप्रशंसा, कल्याण तथा अगस्त्य।

[p. 21]

XXXX

आर.सी. हाजरा ने स्कन्दपुराण में श्लोकों की संख्या के सम्बन्ध में व्यतिक्रम की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा है कि स्कन्दपुराण में श्लोकों की संख्या एक लाख बतायी गयी है, जबकि इसकी सभी संहिताओं की कुल संख्या ८६ हजार ही है। श्री हाजरा की उपर्युक्त टिप्पणी का आधार इण्डिया आफिस लाइब्रेरी, लन्दन के संग्रहालय में प्राप्त 'सूतसंहिता' की पाण्डुलिपि है, जिसमें सूतसंहिता के प्रकाशित संस्करण में उल्लिखित 'ग्रन्थतः पञ्चपञ्चाशतसहस्रेणाभिनिरमिता' के स्थान पर 'ग्रन्थश्चैव षट्त्रिंशतसहस्रेणोपलक्षिता' लिखा है। व्यतिक्रम का केन्द्र सनत्कुमार संहिता है, जिसमें प्रकाशित संस्करण के अनुसार ५५ हजार श्लोक और पाण्डुलिपि में ३६ हजार श्लोक हैं।

[p. 21]

Original Thesis (1976)
A Critical Study of the Sūta Saṁhitā
by Dr Shivamurthy Swamiji
[Banaras Hindu University, Varanasi, India]

- 3 -

Plagiarism (1981)
Sūta-Saṁhitā kā Alocanātmak Adhyayan
by Dr Ramakant Jha
[Kashi Vidyapeeth University, Varanasi, India]

The opinion of scholars is greatly divided on the question of the genuine portions of this Purāṇa. Referring to the views of Vans Kennedy that the Samhitās and the Khaṇḍas may be admitted to be genuine but the Māhātmyas have a questionable character, H.H.Wilson, the pioneer of Purāṇic studies, doubts very much whether any of them was ever a part of this Purāṇa.⁸ M.Winternitz also feels that the ancient version of this Purāṇa is probably completely lost and that what we have now are only later additions.⁹ [pp. 3-4]

XXXX

In a Sanskrit introduction to the Skānda-Purāṇa published by the Veṅkaṭeśvara Press, Bombay, which consists of the seven Khaṇḍas - Māheśvara, etc., - referred to above, the editor, Srikrishna Das, has made great efforts to establish that the Skānda-Purāṇa divided into Khaṇḍas is a Mahāpurāṇa whereas the one divided into Samhitās is an Upapurāṇa of the same name.¹²

[pp. 4-5]

⁸ H.H.Wilson, Viṣṇu-Purāṇa, pp.45-46 (preface)

⁹ M.Winternitz, A History of Indian Literature, vol.I, pp.570ff.

XXXX

¹² "ayi mahā-mānya-sajjana-siromaṇyaḥ! skāndaṁ nāma purāṇaṁ tāvad dvidvidhaṁ - ekaṁ skāndaṁmahā-purāṇaṁ, dvitīyaṁ skāndaṁ nāmopapurāṇaṁ. tatraṣṭādaśa-mahā-purāṇeṣu yat trayodaśaṁ skāndaṁ nāma mahā-purāṇaṁ parigaṇitaṁ tad etaḍ eva - yasyaiṣā prastāvanā'dhuraṁ śrīmadbhiḥ paryālocya kṛtārthīkriyate..... aṭha ca yat skāndaṁ nāmānyadāpyekaṁ purāṇaṁ ṣaṭ-saṁhitātmakaṁ pañcāśat-khaṇḍa-maṇḍitaṁ lakṣa-grantha-śloka-saṁkhyopaniḥḍitaṁ..... samupalabhyate tat tu skāndaṁ nāmopapurāṇaṁ iti nīśayenāvagantavyam..... etena sanātkumāra-saṁhitādi-saura-saṁhitānta-ṣaṭ-saṁhitātmakaṁ skāndaṁ nāma upapurāṇaṁ anyat, māheśvaraḍi-prabhāśānta-sapta-khaṇḍātmakaṁ skāndaṁ nāma mahā-purāṇaṁ cānyaḍ itī sudhīyo niḥsaṁdehaṁ vibhāvayantu, itthaṁ hi skānda-purāṇasya mahāpurāṇatvopapurāṇatva-viśaye nirastāḥ saṁdehaḥ."
- Srikrishna Das, Skānda-Purāṇa, pp.7-12ff (prastāvanā).

पुराण के प्रामाणिक अंशों के विषय में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। वान्स कैनेडी के अनुसार संहिता और खण्ड तो प्रामाणिक हैं, जबकि माहात्म्य संदिग्ध। पौराणिक अध्येताओं में अग्रगण्य विल्सन ने इनमें से किसी के भी पुराण के अंश होने में पूर्ण सन्देह व्यक्त किया है^३। एम. विन्टरनिज के अनुसार स्कन्दपुराण का प्राचीनरूप सम्भवतः पूर्णतया नष्ट हो चुका और इस समय जो प्राप्त है, वह नया क्षेपक है^४। [p. 22]

XXXX

बेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित स्कन्दपुराण की संस्कृत भूमिका में इसके सम्पादक श्रीकृष्णदास ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि खण्डों में विभक्त स्कन्दपुराण महापुराण है और संहिताओं में विभक्त उपपुराण। इस सम्बन्ध में उनका कथन है—

‘स्कन्दं नाम पुराणं तावद्विधम्-एकं स्कन्दमहापुराणम्, द्वितीयं स्कान्दं नामोपपुराणम्। तत्राष्टादशमहापुराणं परिगणितं तदेतदेव-यस्यैषा प्रस्तावनाऽधुना श्रीमदभिः पर्यालोच्य कृतार्थीक्रियते.....अथ च स्कान्दं नामान्यदप्येकं पुराणं षट् संहितात्मकं पञ्चाशतखण्डमण्डितं लक्षग्रंथ (श्लोक) संख्योपनिबद्धं समुपलभ्यते लघु स्कन्दं नामोपपुराणमिति’।

[p. 22]

^३ विष्णुपुराण की भूमिका, पृ. ४५-४६।

^४ ए हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर, भाग १, पृ. ५७०।

^५ स्कन्दपुराण की प्रस्तावना, पृ. ७-१२।

Original Thesis (1976)
A Critical Study of the Sūta Saṁhitā
by Dr Shivamurthy Swamiji
[Banaras Hindu University, Varanasi, India]

- 4 -

Plagiarism (1981)
Sūta-Saṁhitā kā Alocanātmak Adhyayan
by Dr Ramakant Jha
[Kashi Vidyapeeth University, Varanasi, India]

All the remaining passages quoted by the editor from different sources, including the Skanda-Purāṇa edited by him, only give an impression that there is an Upapurāṇa by the name of Skānda, but they certainly do not offer sufficient evidence to prove that the Samhitās constitute that Upapurāṇa. Hazra, who made a critical survey of the entire Upapurāṇa literature, has conclusively shown that the third Upapurāṇa sometimes called Skānda is only another name of Nānda (or Nandī) - a Śākta-Upapurāṇa - which is now lost.¹⁶

[pp. 5-6]

XXXX

Taking into account what the Samhitās have to say on this topic, it is beyond doubt that they consider themselves as belonging to the Mahāpurāṇa: 1) The Sūta-Saṁhitā in the first chapter of its Śivamahātmya-Khaṇḍa, before proceeding to specify the Samhitās constituting the Skanda-Purāṇa, mentions the name of this Purāṇa in the list of Mahāpurāṇas only and not in that of Upapurāṇas;²⁰ ii) The Skanda-Purāṇa is generally assigned the thirteenth position among the eighteen Mahāpurāṇas and the Śaṅkara-Saṁhitā clearly states that the six Samhitās belong to the Skanda-Purāṇa which is the thirteenth in order;²¹ iii) Mādhavamantri, the commentator of the Sūta-Saṁhitā, also writes that the Samhitās enlisted by the text are the divisions of the thirteenth Purāṇa known as Skanda,²² thereby confirming that the Samhitās were considered to be an integral part of the Skanda-Mahāpurāṇa as early as the 14th century A.D. Hazra also endorses the view that though the Khaṇḍa division of the Skanda-Purāṇa is supported by the Nārada-Purāṇa, its real division seems to have been made into six Samhitās, Sanatkumāra, etc., and that the Khaṇḍas which constitute the Bombay edition of the Skanda-Purāṇa originally belonged to one or other of these Samhitās.²³

[pp. 7-8]

¹⁶ R.C.Hazra, Studies in the Upapurāṇas, vol.II, pp.476-78.

²³ R.C.Hazra, Studies in the Purāṇic Records on Hindu Rites and Customs, pp.158, 163.

श्रीकृष्णदास द्वारा विभिन्न स्रोतों से गृहीत उद्धरणों से इतना सिद्ध होता है कि 'स्कान्द' नाम का एक उपपुराण भी है, किन्तु इससे यह नहीं सिद्ध होता है कि संहिता से उपपुराण बनता है। उपपुराण साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन करने वाले आर.सी.हाजरा इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि तृतीय उपपुराण (जिसे स्कान्द भी कहते हैं) मात्र 'नान्द' उपपुराण का नामान्तर है^१। श्री हाजरा के अनुसार तृतीय उपपुराण 'नान्द' ही है। 'स्कन्द' उसी का अपर नाम है।

[pp. 22-23]

XXXX

संहिताओं को उपपुराण इसलिए भी नहीं माना जा सकता कि संहिताएं अपने को महापुराण से सम्बद्ध मानती हैं न कि उपपुराण से। सूतसंहिता अपने 'शिवमाहात्म्य' खण्ड के प्रथम अध्याय में स्कन्दपुराण को पुराणों की सूची में गिनती है, न कि उपपुराणों की सूची में^३। स्कन्दपुराण सामान्यतः अष्टादशपुराणों में तेरहवें स्थान पर गिना जाता है। सूतसंहिता में भी इसका तेरहवां स्थान ही है। शंकरसंहिता स्पष्ट रूप से घोषणा करती है कि ये छः संहिताएं उस स्कन्दपुराण से सम्बद्ध हैं, जो पुराणों में तेरहवां है^४। सूतसंहिता के टीकाकार माधवमन्त्री ने भी इन संहिताओं को अष्टादश पुराणों में त्रयोदश स्कन्दपुराण का ही अंग स्वीकार किया है^५। फलतः संहिताएं १४वीं शती से स्कन्दपुराण का आन्तरिक अंग मानी जाती रही हैं। आर.सी. हाजरा का भी अभिमत है कि यद्यपि स्कन्दपुराण के खण्ड-विभाजन का समर्थन नारदीय पुराण में भी है, किन्तु इसका वास्तविक विभाजन सनत्कुमारादि छः संहिताओं में है। स्कन्दपुराण के बम्बई संस्करण में प्राप्त खण्ड विभाजन मूलरूप से किसी न किसी संहिता से सम्बद्ध है^६।

[p. 23]

१. स्टडीज इन दि उपपुराणाज, भाग २, पृ. ४७६।

XXXX

४. 'तत्र स्कान्दं प्रवक्ष्यामि पुराणेषु त्रयोदशम्।

संहिताभिस्तथा षड्भिलक्षैर्ग्रन्थैर्विराजितम् ॥'

—शङ्करसंहिता

५. 'अथेदानीं विवक्षितां सूतसंहितामवतारयितुमनुक्रान्तानां पुराणानां मध्ये त्रयोदशस्य स्कन्दपुराणस्य संहितादिविभागमाह'।

—सू.सं.१/१/१९, तात्पर्यदीपिका टीका

६. स्टडीज इन दि पुराणिक रेकार्ड्स आन हिन्दू राइट्स एण्ड कस्टम्स, पृ. १५८, १६३।

II. DATE OF THE SŪTA-SAMHITĀ

About the date of the Sūta-Saṁhitā nothing definite can be said as is the case with most of the extant works in ancient Indian Literature. Nevertheless, attempts have been made to unravel the mystery of the past. The dates so far assigned by scholars should, however, be taken with some reservations. A very old manuscript of this Purāṇa written in Gupta character was discovered in Nepal by Cecil Bendall and Haraprasada Shastri, both of whom carefully studied the palaeography of the manuscript and came to the conclusion that it must have been copied before 659 A.D.²⁴ The discovery of the manuscript drew the attention of many scholars who jumped to the conclusion that the Skanda-Purāṇa must be older than they had hitherto supposed. On the assumption that the Sūta-Saṁhitā formed an integral portion of the manuscript of this Purāṇa, M.Narayanawami Iyer, the only scholar to write an article exclusively on the Sūta-Saṁhitā, pushed back the date of the Skanda-Purāṇa to the beginning of the Christian era.²⁵ The German Indologist, H.W.Schomerus, eager to

[p. 9]

²⁴ Haraprasada Shastri, A Catalogue of Palm-leaf and Selected Paper Mss. belonging to the Durbar Library, Nepal, 1905, p.52(preface)

²⁵ "The Sūta-Saṁhitā, perhaps the most favourite book among Indian Saṁyāsins, forms part of the huge Skanda-Purāṇa.... This Purāṇa, owing to its strong Śaivite bias and the large number of Śaivite shrines it mentions, has generally been put in the ninth or 10th century A.C. by Western scholars. And it must have been with a shock of surprise that they would have received

(continued)

सूतसंहिता का समय

प्राचीन भारतीय साहित्य में किसी भी कृति का निश्चित समय बता पाना सम्भव नहीं है। 'सूतसंहिता' के समय निर्धारण के विषय में भी यही स्थिति है। विद्वानों ने इसके लिए अतीत के गर्भ को उद्घाटित करने का यथासंभव प्रयास किया है। हरप्रसाद शास्त्री एवं सेशिलबेण्डल ने नेपाल लाइब्रेरी में स्कन्दपुराण की गुप्तकालीन पाण्डुलिपि खोज निकालने में सफलता पायी। यह पाण्डुलिपि अब तक उपलब्ध पुराण की सभी पाण्डुलिपियों में

[p. 23]

प्राचीनतम है। दोनों विद्वानों ने इसका पाण्डुलिपिशास्त्रीय अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि निश्चय ही यह पाण्डुलिपि ६५९ ई. से पूर्व की है^१। इस प्राचीन पाण्डुलिपि की खोज ने अनेक विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि स्कन्दपुराण उन सभी तिथियों से प्राचीन है, जो अबतक मानते रहे हैं। इस पाण्डुलिपि में आभ्यन्तरिक अंग के रूप में सूतसंहिता भी विद्यमान है, इस धारणा के आधार पर एम.नारायण स्वामी अय्यर ने सूतसंहिता पर एक विशेष निबन्ध में स्कन्दपुराण का काल ई. शती का प्रारम्भ माना^२। भारतीय विद्वानों के अतिरिक्त जर्मन विद्वान् एच.डब्लू.सोमरस

१. ए कैटेलाग आफ पाम लीफ एण्ड सेलेक्टेड पेपर मैन्युस्क्रिप्ट्स विलांगिंग टु दि दरबार लाइब्रेरी नेपाल, १९०५, पृ. ५२ मू.

२. एम.ना.स्वा. अय्यर—दि सूतसंहिता आन दि शैव आगमाज, पृ. १३४।

79

of each of the other four elements.⁶³ The following diagram illustrates the point:

ETHER

AIR

FIRE

WATER

EARTH

(iii) Prakṛta-vaikṛta-sarga

This covers the ninth and last creation called **Kaumāra-sarga** in which Brahmā creates the five great sages viz., **Sanaka, Sanātana, Sanandana, Rishi and Sanatkumāra**.⁶⁴

⁶³ "ekaikaṁ dvividhaṁ kṛtvā teṣāṁ madhye surottamaḥ
 adān pañca samāya teṣāṁ ekaikaṁ āstikāḥ
 kṛtvā caturdāśa teṣāṁśān ādāya caturāḥ surāḥ
 yathā-kramaṇa bhūtānaṁ caturāś tāsā ca kāraṇam
 yathā-kramaṇa bhūtārcheṇaikenaikaṁ karoti tat"

- SS IV.1.5.52.

⁶⁴ SS I.10.19b-20.

दार्शनिक विचार १२३

में शेष तत्त्वों के चतुर्थांश को मिलाने से पञ्चतत्त्वों की पञ्चीकरण प्रक्रिया बनती है। इस प्रकार प्रत्येक तत्त्व की पञ्चात्मकता सिद्ध होने पर भी भागाधिक्य के कारण पृथिव्यादि विभाग व्यवहार होता है। व्यास भी 'वैशेष्यास्तु तद्वादस्तद्वादः' कहकर इसी तथ्य की ओर संकेत करते हैं।

वस्तुतः आकाशादि पञ्चमहाभूत, जैसा कि ऊपर कहा गया है, प्रथमतः अपञ्चीकृत तन्मात्राओं के रूप में ईश्वर शिव द्वारा प्राकृतसर्ग में आविर्भूत हुए। पुनः उन्हीं की कृपा से ब्रह्मा द्वारा पञ्चीकरण क्रिया से आकाशादि स्थूल महाभूत के रूप में परिणत हुए^१। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक महाभूत पञ्चसूक्ष्म तत्त्वों का विभिन्न अनुपातों में मिश्रण है। सूक्ष्म शब्दादि तत्त्वों को विभिन्न आनुपातिक मिश्रण से बनने वाले महाभूतों की रूपरेखा इस प्रकार है^२—

शब्द १	आकाश	वायु	तेजस
स्पर्श २			
रूप ३			
रस ४			
गन्ध ५			
	जल	पृथिवी	

वंश

'पुराणं पञ्चलक्षणम्' इस परिभाषा के अनुसार 'वंश' भी पुराणों का प्रमुख वर्ण्यविषय है। सूतसंहिता भी अपने प्रथम अध्याय में सर्गादि वर्णन का वचन तो देती है, किन्तु उसका यह वर्णन अन्य पुराणों की अपेक्षा संक्षिप्त और अपूर्ण ही कहा जा सकता है। जहाँ

१. 'ततस्तस्य प्रसादेन निवार्य कमलासनः ।
 शब्दादीनि च भूतानि पञ्चीकृत्य द्विजोत्तमाः ।
 तेभ्यः स्थूलाम्बरं वायुं वह्निं चैव जलं महीम् ॥ —सू.सं., १/१०/३९ व, ४० व ।
२. 'यथा वियदादिकमेकैकं द्विधा द्विधा विभज्य तत्र द्विघातो द्वितीयभागं चतुर्धा विभज्य वायुवादिभूत-
 चतुष्टयप्रथमभागोस्वैकैकं योजयेत् । एवं वायोरपि द्वितीयभागं चतुर्धा विभज्य वायुप्रथमभागं
 परित्यज्य वायुव्यतिरिक्तभूतचतुष्टयप्रथमभागेषु योजयेत् । एवं तेजसः उदकस्य पृथिव्याश्च द्वितीयं
 द्वितीयं भागं चतुर्धाविभज्य स्वस्वप्रथमभागं परित्यज्यावशिष्टभूतचतुष्टयप्रथमभागेषु योजितं
 सत्येकैकभूतस्यार्धं स्वकीयमर्धं स्वैतरभूतचतुष्टयात्मकमित्येकैकस्य पञ्चात्मकत्वेऽपि
 भागाधिक्यात्पृथिव्यादि विभागव्यवहार इति । —सू.सं., १/१०/३९ ता.टीका ।
 तुलनीय—'द्विधा विधाय चैकैकं चतुर्धा प्रथमं पुनः ।
 स्वस्तेतरद्वितीयां शैर्योजनात् पञ्च पञ्च ते ॥ —पञ्चदशी/२९

